विचार बिन्दु

यदि किसी को भी भूख-प्यास नहीं लगती, तो अतिथि सत्कार का अवसर कैसे मिलता। –विनोबा

बंजर होने से बचानी होगी कृषि भूमि

उपजाऊपन की दृष्टि से सबसे व्यर्थ जमीन को बंजर भूमि कहा जाता है। मरुस्थलीकरण तेजी से फैल रहा है, मिट्टी की उर्वरता लगातार घटती जा रही है। ऐसे में बंजर भूमि का बढ़ना एक चुनौती बनती जा रही है। भूमि के बंजर होने की समस्या ने आज दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती पैदा कर दी है। भारत की बात करें तो यहां उपजाऊ भूमि के बंजर होने का खतरा निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में मात्र 11 प्रतिशत जमीन ही उपजाऊ है। मरुस्थलीकरण का क्षेत्रफल बढ़ता जा रहा है। भारत में कुल 32 करोड़ 90 लाख हेक्टेयर जमीन में से 12 करोड़ 95 लाख 70 हजार हेक्टेयर भूमि बंजर बताई जा रही है। बंजरपन का रकबा साल दर साल बढ़ता ही जा रहा है जिसे सख्ती से रोका नहीं गया तो देश में अनाज का संकट खड़ा हो सकता है। कृषि भूमि का मरुस्थलीकरण और बंजर होने का खतरा धीरे-धीरे करीब एक अरब लोगों की जिंदगी के लिए खतरा बन चुका है। इसी के साथ लाखों तरह की वनस्पति प्रजातियों के भी विलुप्तिकरण का खतरा बन चुका है। खेती पर निर्भर लोग पलायन को मजबूर हैं। अनुमान यह है कि इस सदी के मध्य तक धरती की एक चौथाई मिट्टी बंजर हो चुकी होगी। अभी से इसकी चिंता ना की गई तो, यह संकट बड़े मानवीय संकट में बदल सकता है।

जलवायु परिवर्तन सहित सूखा, बाढ़,जहरीले कीटनाशकों के तेजी से इस्तेमाल, वनों की कटाई, अधिक चराई, खराब सिंचाई और अत्यधिक जल दोहन के कारण भू-जल स्तर में निरंतर गिरावट आने से उपजाऊ धरती मरुस्थल का रूप धारण करती जा रही है। विश्व के समक्ष यह एक बड़ी समस्या है जो दिन प्रतिदिन गहराती जा रही है। हमारे लाख प्रयासों के बावजूद मरुस्थल का फैलाव रोका नहीं जा सका है। इस समस्या की जड़ में एक वजह मानवजनित कारणों को बताया जा रहा है।

नीति आयोग के अनुसार भारत में 67.30 लाख हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य भूमि में शर्तिया और लवणता बढ़ने के कारण यह भूमि बंजर हो चुकी है। इस बंजर भूमि में से लगभग 37.70 लाख हेक्टेयर भूमि क्षारीय है। और 29.60 लाख हेक्टेयर भूमि लवणीय है। अभी तक इस बंजर भूमि में लगभग 20 लाख हेक्टेयर क्षारीय भूमि को और लगभग 70 हजार हेक्टेयर लवणीय भूमि को फिर से उपजाउ बनाया जा चुका है। बचे हुए बंजर भूमि को फिर से उपजाऊ बनाने के प्रयास किया जा रहे हैं, लेकिन यह एक बड़ी चुनौती है।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया हर साल 24 अरब टन उपजाऊ भूमि खो देती है। भूमि की गुणवत्ता खराब होने से राष्ट्रीय घरेलू उत्पाद में हर साल आठ प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है। भूमि क्षरण और उसके दुष्प्रभावों से मानवता पर मंडराते जलवायु संकट के और गहराने की आशंका है। मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा बड़े खतरे हैं जिनसे दुनिया भर में लाखों लोग, विशेषकर महिलाएं और बच्चे, प्रभावित हो रहे हैं। इससे निपटने के लिए वैश्विक प्रयासों की महती जरुरत है। मरुस्थल या रेगिस्तान ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों को कहा जाता है जहां जलपात (वर्षा तथा हिमपात का योग) अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा काफी कम होती है। मरुस्थलीकरण की परिभाषा के अनुसार यह जमीन के खराब होकर अनुपजाऊ हो जाने की ऐसी प्रक्रिया है जिसमें जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय गतिवधियों समेत अन्य कई कारणों से शुष्क, अर्द्ध-शुष्क और निर्जल अर्ध-नम इलाकों की जमीन रेगिस्तान में बदल जाती है। इससे जमीन की उत्पादन क्षमता में कमी और ह्रास होता है। एशियाई देशों में मरुस्थलीकरण पर्यावरण सम्बन्धी एक प्रमुख समस्या है।

भारत में कुल भूमि क्षेत्रफल करीब 329 मिलियन हेक्टेयर है। इसमें खेती करीब 144 मिलियन हेक्टेयर में होती है, जबकि लगभग 178 मिलियन हेक्टेयर भूमि बंजर है। इसे सुधारने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है। वहीं असिंचित एवं डूब से प्रभावित जमीन को भी खेती योग्य बनाया जा रहा है।

मरुस्थलीकरण शुष्क, अर्द्ध शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भूमि का क्षरण है। मुख्य रूप से, यह मानवीय गतिविधियों और फिर जलवायु परिवर्तन के कारण होता है। इसका मतलब मौजूदा रेगिस्तानों का विस्तार नहीं है, बल्कि यह शुष्क भूमि पारिस्थितिक तंत्र, वनों की कटाई, अधिक चराई, खराब सिंचाई कार्य प्रणाली आदि के कारण होता है जो भूमि की उत्पादकता को प्रभावित करता है।

भारत में कुल भूमि क्षेत्रफल करीब 329 मिलियन हेक्टेयर है। इसमें खेती करीब 144 मिलियन हेक्टेयर में होती है, जबकि लगभग 178 मिलियन हेक्टेयर भूमि बंजर है। इसे सुधारने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है। वहीं असिंचित एवं डूब से प्रभावित जमीन को भी खेती योग्य बनाया जा रहा है। देश में करीब 71 लाख हेक्टेयर भूमि मृदा ऊसर से प्रभावित है। जबकि पूरे विश्व में यह आँकड़ा लगभग 9520 हेक्टेयर के करीब बताया जाता है। जो मृदा ऊसर से प्रभावित है, इसे भी खेती योग्य बनाने की कवायद चल रही है।

आँकड़े बताते हैं कि भारत में वर्ष 1951 में मनुष्य भूमि अनुपात 0.48 हेक्टेयर प्रति व्यक्ति है, जो दुनिया के न्यूनतम अनुपातों में से एक है। वर्ष 2025 में घटकर यह आंकड़ा 0.23 हेक्टेयर होने का अनुमान है। ऐसे में खेती की मृदा संरक्षण के जरिए एक बड़ी चुनौती से निबटा जा सकता है। ऐसे में उपजाऊ मिट्टी की सुरक्षा के साथ ही अनुपजाऊ मिट्टी को भी कृषि योग्य बनाया जा रहा है।

स्पेस एप्लीकेशंस सेंटर (एसएसी) द्वारा मरुस्थलीकरण और भूमि की गुणवत्ता के गिरते स्तर पर बनाये देश के पहले एटलस के अनुसार भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का तकरीबन 30 फीसदी हिस्सा मरुस्थल में तब्दील हो चुका है। इसके अलावा देश के 69 फीसदी हिस्से को शुष्क क्षेत्र के तौर पर वर्गीकृत किया गया है। देश के सामने उपजाऊ भूमि के क्षरण का यह एक बड़ा खतरा है जिसे रोकने के लिए सामूहिक प्रयासों की महती जरुरत है। देश में बढ़ रहे मरुस्थलीकरण के आंकड़े बेहद चौंकाने वाले है। बंजरपन बढ़ रहा है और साथ ही मिट्टी का कटाव भी बढ़ रहा है। देश का 30 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र मरुस्थलीकरण की चपेट में है। तीन मिलियन हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि पिछले 15 वर्षों में ख़राब हुई है। देश में प्रति मिनट 23 हेक्टेयर शुष्क भूमि सूखे और मरुस्थलीकरण की चपेट में आ जाती है जिसकी वजह से 20 मिलियन टन अनाज का संभावित उत्पादन प्रभावित होता है। देश का 70 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र शुष्क भूमि के रूप में है जबकि 30 प्रतिशत जमीन भूक्षरण और 30 प्रतिशत भूमि मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया से गुजरती है। भारत सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ शुरू की गई हैं जैसे प्रधानमंत्री आवास बीमा योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना प्रति बूंद अधिक फसल, आदि। ये सब भूमि क्षरण को कम करने में मदद कर रहे हैं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 29 जून, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र प्रातः 3:49 तक, शोभन योग सांय 6:54 तक, कौलव करण दिन 2:20 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज बुध कर्क राशि में दिन 12:27 पर प्रवेश करेगा। शानि वक्री रात्रि 12:40 पर होगा। आज बोहरा अष्टमी, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:22 से 9:05 तक, चर 12:30 से 2:12 तक, लाभ-अमृत 2:14 से 5:38 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:20

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

सिंह
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में आपसी वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धार्मिक कार्यों में सहभागिता रहेगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मनोरंजन पर खर्च हो सकता है।

वृश्चिक
व्यावसायिक आर्थिक मामलों मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
मनोस्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

पानी में मीन पियासी रे!

डॉ. रामावतार शर्मा

संयुक्त राज्य अमेरिका को विश्व का सबसे धनी देश माना जाता है। अमेरिका जाना और वहां जा कर अपना भाग्य चमकाना कितने ही लोगों का सपना है। परंतु कितने लोग हैं जो अमेरिका को तथ्यों पर परखने का प्रयास करते हैं? अभी इसी महीने अमेरिका की प्रसिद्ध पत्रिका टाइम में वहां के एक राज्य केण्टुकी के ग्रामीण इलाकों के बारे में लेख लिखा गया है जो एकदम चौंकाने वाला है। खास बात यह है कि यह लेख वहां की गोरी आबादी के बारे में लिखा गया है। लेख के अनुसार केण्टुकी के ग्रामीण अंचल का जीवन बड़ा कष्टपूर्ण है। इस राज्य की अधिकतर आबादी नशीली दवाओं, हिंसा, पुलिस कस्टडी आदि के चक्र में अपना जीवन बिताती नजर आती है। लेख में एक युवक ने अपने जीवन में इस तरह के वातावरण के कुप्रभावों का जिक्र किया है। 2024 में प्रकाशित एक अमेरिकी पुस्तक 'व्हाइट रूरल रेज' के अनुसार ग्रामीण अमेरिका वृहद अमेरिका के लिए एक बड़ा खतरा है क्योंकि ये असफल एवम मानसिक तौर पर अस्थिर लोग अतिवादी होते हैं और धुर दक्षिण पंथ की तरफ अग्रसर हो कर हिंसा फैलाते हैं। यहां लेखकों द्वारा लोगों को दोषारोपित करना उचित नहीं लगता क्योंकि लोग तो तंत्र के प्रभाव से सार्थक या निरर्थक जीवन की तरफ अग्रसर होते हैं।

इसके विपरीत यदि तथाकथित वामपंथी रूस की तरफ जाएं तो बोल्शेविक क्रांति ने आम नागरिक के जीवन को उठाने की बजाय अति धनी तथा प्रभावशाली ओलिगार्क प्रणाली को जन्म दिया जिसने आज के रूस को पूरी तरह से नियंत्रित कर रखा है। ये ओलिगार्क्स प्राचीन रूसी जार से भी अधिक एश-ओ-आराम का जीवन जी रहे हैं। एक अन्य उदाहरण में 1932-33 के यूक्रेनियन होलोडोमोर का है जो अत्याचारी स्टालिन के मनुष्य निर्मित महा अकाल के रूप में जाना जाता है। सामूहिक खेती के नाम पर सरकारी तंत्र ने मूर्खतापूर्ण तथा दमनकारी निर्णय ले कर यूरोप के इस अन्न भंडार माने जाने वाले क्षेत्र में ऐसी स्थिति पैदा कर दी थी जिसके फलस्वरूप लाखों लोग भूख से मर गए थे। आज फिर यूक्रेन का रूस से युद्ध जारी है। कई पश्चिमी विचारकों का मानना है कि युद्ध बंद होने के बाद रूस के ओलिगार्क्स की तरह यूक्रेन में भी यूरोपियन धन्नासेठ वहां के खेत खलिहानों पर कब्जा कर लेंगे और लोगों का जीवन कष्टदायक ही बना रहेगा।

इधर भारत में भी राष्ट्रीय संपदा गिने चुने औद्योगिक घरानों के हाथों में सिमटती जा रही है और स्थितियां इस तरह की बन रही हैं जहां छोटे एवम् मझोले उद्यमियों का टिका रह पाना कठिन होता जा रहा है। विश्व में हो रहे परिवर्तनों को हम नकार रहे हैं या फिर अनदेखा कर रहे हैं। इस नीति के परिणाम भविष्य में देखने पड़ सकते हैं परंतु तब तक बड़ा नुकसान हो चुका होगा। इतिहास इंगित करता है कि यदि 1940 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने हिटलर के शांति प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया होता तो न तो लाखों यहूदी मारे जाते, न आज का इजरायल अरब संघर्ष जन्म लेता और ना ही ब्रिटिश साम्राज्य का इतना शीघ्र पतन होता। वास्तविकता को नकारना, अनदेखा करना इसलिए विकसित होता है क्योंकि सरकार और वृहद समाज के बीच कोई संपर्क नहीं होता है। चंद जाति, नस्ल, स्थान एवम् धर्म विशेष के लोगों को सरकार या संगठन में स्थान देकर मान लिया जाता है कि सबकुछ ठीक हो जायेगा परंतु वास्तविकता में ऐसा होता नहीं है।

संचार क्रांति से देश दुनिया के विभिन्न लोग एक दूसरे के संपर्क में आने लगे हैं। ऐसे माहौल में बरगलाने और ध्यान भटकाने वाली नीतियों से अल्पकालीन फायदे तो हो सकता हैं परंतु दीर्घकाल में बिखराव की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। वृहद जनमानस समय-समय पर निरंकुशता के फन को कुचलता रहा है, शासक के दंभ अहंकार पर प्रहार करता रहा है परंतु अतिवादी दृष्टिकोण की अपनी शक्ति होती है जो किन्ही विशिष्ट परिस्थितियों में प्रचंड हो सकती है और जनतांत्रिक ताने बाने को नष्ट कर सकती। इसलिए बेहतर होगा कि देश की सरकार में बैठे लोगों का प्रथम उद्देश्य सत्ता में बने रहना मात्र नहीं होना चाहिए बल्कि लगातार बदलती स्थितियों को समझने के लिए व्यापक जनसंपर्क द्वारा लोगों की आवश्यकताओं और भावनाओं का विश्लेषण कर नीतियां निर्मित करनी चाहिए। शासन करना एक जटिल कार्य है इसलिए सत्ता के शिखर पर बैठे लोगों को बड़ी आलोचना सुनने के लिए अपने मानस पटल को खुला रखना चाहिए। जाति और धर्म के सहारे सत्ता में आए लोगों की सार्थक आलोचना भी एक खतरनाक कार्य होता है इसलिए आलोचक चुप हो जाते हैं। शासक भूल जाता है कि आलोचक ही वास्तविक मित्र होता है जबकि समर्थक तो लकीर के फकीर होते हैं जिनसे वोट तो मिलते हैं परंतु उनसे किसी मार्गदर्शन की आशा नहीं की जा सकती है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

भारतीय साहित्य का अनुवाद चुनौतीपूर्ण : प्रो. ज्यांग जिंग खुई

हिन्दू कॉलेज में हिंदी विभाग द्वारा काव्यानुवाद की चुनौतियां विषय पर व्याख्यान आयोजित

दिल्ली। हिन्दू कॉलेज में हिंदी विभाग द्वारा "काव्यानुवाद की चुनौतियां" विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ। भारत का साहित्य अत्यंत विपुल और वैविध्यपूर्ण है, उसका चीनी भाषा में अनुवाद किसी चुनौती से कम नहीं है। सूरसागर, गोदान तथा शेखर एक जीवनी जैसी कृतियों का चीनी में अनुवाद करने वाले प्रसिद्ध विद्वान प्रो. ज्यांग जिंग खुई ने कहा कि भारत और चीन भले ही पड़ोसी मुल्क हैं किंतु उनकी संस्कृति और सभ्यता में बुनियादी फर्क है।

उदाहरण देते हुए प्रो. ज्यांग जिंग खुई ने कहा कि चीन के लोग भगवान पर नहीं बल्कि खुद पर, अपने माता-पिता और अन्य लोगों पर ज्यादा भरोसा रखते हैं। भक्तिकालीन साहित्य के अनुवाद करने में यह बुनियादी फ़र्क़ बड़ा प्रभावशाली हो जाता है, क्योंकि इस साहित्य को चीनी लोकमानस के अनुसार अनुवादित करना आसान नहीं होता। प्रो. ज्यांग जिंग खुई ने हिंदू महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित एक समारोह में काव्यानुवाद की चुनौतियाँ विषय पर बोलते हुए चीन में भारतीय साहित्य के अनुवाद की लम्बी परंपरा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जू फैनचेंग, ची श्यैनलिन, जिन केमू, लियू अनवु, जिन डिंगहान, हुआंग बाओशेंग और शुए ख छिओ जैसे मूर्धन्य विद्वानों ने चीनी भाषा में उपनिषद, नाट्यशास्त्र, वाल्मीकि रामायण, भगवत् गीता से लेकर कालिदास की अनेक रचनाओं तक के अनुवाद में अपना जीवन समर्पित किया है। बीजिंग विश्वविद्यालय में हिन्दी के आचार्य प्रो. खुई ने कहा कि 2024 वह साल है जब चीन महान कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चीन यात्रा की शताब्दी मना रहा है और उनके साहित्य तथा अवदान को श्रद्धा के साथ याद कर रहा है।

प्रो. ज्यांग ने काव्यानुवाद की चुनौतियों पर कहा कि पंक्तियों की ध्वन्यात्मकता,लयात्मकता, पंक्तियों के बीच का मौन, शब्द, प्रतीक एवं सबसे ज्यादा भावों के अनुवाद में समस्या आती है। उन्होंने नायिका के सौंदर्य का चीनी भाषा में अनुवाद के समय की अपनी चुनौतियों को साझा करते हुए बताया कि चीनी सभ्यता के लोग किसी स्त्री के बालों को सर्प और आंखों को कमल के फूल की उपमा नहीं समझ पाते हैं। ऐसे में अनुवादक के समक्ष चुनौती प्रस्तुत होती है, क्योंकि चीन के लोगों की आंखें ही प्राकृतिक रूप से प्राय: छोटी होती हैं। अनुवाद की मौलिकता पर केंद्रित एक प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रो. जियांग ने कहा कि अनुवाद एक स्वतंत्र, मौलिक एवं रचनात्मक इकाई के रूप में होती है जिसमें अनुवादक अपने भावों और विचारों के अनुरूप ही अनुवाद करता है।

- **'भारत और चीन भले ही पड़ोसी मुल्क हैं किंतु उनकी संस्कृति और सभ्यता में बुनियादी फर्क है'**
- **प्रसिद्ध विद्वान प्रो. ज्यांग जिंग खुई ने सूरसागर, गोदान तथा शेखर एक जीवनी जैसी कृतियों का चीनी में अनुवाद किया है**
- **नयी वैश्विक परिस्थितियों में अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक गतिविधि बन गया है, जो विभिन्न देशों के लोगों को आपसे में जोड़ने का काम करता है : प्रो.अनिल राय**

इससे पहले महाविद्यालय परिसर में पहुंचने पर महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. अंजू श्रीवास्तव ने प्रो. ज्यांग जिंग खुई का स्वागत करते हुए कहा कि हिन्दू कॉलेज की पुरानी और समृद्ध परम्परा में भारतीय उपमहाद्वीप तथा एशिया के अनेक देशों के विद्यार्थी जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि प्रो. खुई की यह यात्रा इस सम्बन्ध में और अधिक उपादेय होगी जब दोनों देशों के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक अध्ययन की गति तेज होगी। आयोजन के विशिष्ट अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रो. अनिल राय ने प्रो. खुई के साथ व्यतीत अपने चीन प्रवास को याद करते हुए अविस्मरणीय अनुभव बताया।

प्रो. अनिल राय ने कहा कि नयी वैश्विक परिस्थितियों में अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक गतिविधि बन गया है जो विभिन्न देशों के लोगों को आपसे में जोड़ने का काम करता है। हिन्दी विभाग की प्रभारी प्रो. रचना सिंह ने प्रो. खुई तथा उनके शिष्य हे यांग का स्वागत किया। प्रो. सिंह ने हिंदी विभाग द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी भी प्रो. खुई को दी। विभाग के विद्यार्थियों दिव्यांश प्रताप सिंह तथा मोहित कुमार ने प्रो. खुई को महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका इंद्रप्रस्थ तथा विभाग की हस्तलिखित पत्रिका हस्ताक्षर के ताज़ा अंक भेंट किये।

हिंदू महाविद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक प्रो. रामेश्वर राय ने कहा कि चीन से तकनीक तथा विज्ञान के साथ साहित्य के क्षेत्र में भी प्रेरणा ली जानी चाहिए जहाँ अनुवाद की ऐसी शानदार परम्परा बन गई है। प्रो. राय ने कहा कि प्राकृतिक उपमाएं अनुवाद में भले ही बड़ी चुनौती हों किंतु भारतीय संस्कृति में सौंदर्य को हमेशा से ही प्रकृति से अभिन्न माना गया है और देह से मुक्त होकर प्रकृति की ओर उन्मुखता सौंदर्य की व्यापकता को और बढ़ा देता है। कमल की उपमा का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि कमल संभावनाओं एवं सात्विकता को व्यक्त करता है क्योंकि वह सूर्य के उदय के साथ खिलता है।

कार्यक्रम के समापन पर विभाग के अध्यापक डॉ. पल्लव ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में हिंदी विभाग एवं ईस्ट एशियन स्टडीज के अनेक शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मूलभूत समस्याओं को लेकर लोगों में आक्रोश

कांग्रेस नेताओं ने लोगों के साथ जलदाय विभाग के अधिकारियों का घेराव किया

भीलवाड़ा में लोगों ने जलदाय विभाग के अधिकारियों का घेराव किया।

भीलवाड़ा, (निसं)। जलदाय विभाग, चम्बल परियोजना और सीवरेज ठेकेदार की लापरवाहियों का खामियाजा इन दिनों शहरवासी भुगत रहे हैं। आए दिन अलग-अलग कॉलोनियों में पाइप लाइन तोड़े जाने और जलापूर्ति प्रभावित होने की खबरें आम हो गई हैं, लेकिन इन विभागों की तरफ से कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, इसलिए शुक्रवार को कांग्रेस नेताओ ने लोगों के साथ जलदाय विभाग के अधिकारियों का घेराव करते हुए पीपा बजा कर उन्हें कुंभकर्ण नींद से जगाने का प्रयास किया। नेता प्रतिपक्ष धर्मेंद्र पारीक और सेवादल के मनोज पालीवाल के नेतृत्व में बड़ी संख्या में लोग विभाग के कार्यालय पहुंचे और पांच सूत्रीय मांगों को लेकर एक ज्ञापन सौंपा। इस दौरान लोगों ने अधिकारियों का घेराव करते हुए पीपा बजाकर उन्हें आमजन की समस्याओं को सुनने के लिए जगाने का प्रयास किया। ज्ञापन में शहर में पर्याप्त जलापूर्ति करने, निश्चित तारीख और समय पर आपूर्ति करने, सीवरेज द्वारा बार- बार पाइप लाइन को बाधित करने के संबंध में स्थाई तौर पर निर्णय करने, दूषित जल जो लीकेज के कारण पाइप लाइनों में आ जाता है उसका सर्वे करवा ठीक करने और शहर के सभी हेंडपैंपों को और पुरानी जलदाय विभाग की ट्यूबवेल दुरस्त करने की मांग की गई।

कुश्ती प्रतियोगिता में अश्विनी बिश्नोई का पदक जीतने पर स्वागत

अश्विनी बिश्नोई ने 15 वर्ष आयु और 65 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीता

भीलवाड़ा, (निसं)। पहलवानी के क्षेत्र में एक बार फिर भीलवाड़ा की बेटी ने जिले का नाम पूरे देश में ही नहीं दुनिया में रोशन किया है। जॉर्डन की राजधानी अम्मान में संपन्न हुई एशियन कुश्ती प्रतियोगिता में भारत के लिए गोल्ड मेडल जीतने वाली अश्विनी बिश्नोई भीलवाड़ा की बेटी है, जिसने विदेशी सरजमीं पर अपनी काबिलियत और बलबूते पर देश और प्रदेश के साथ अपने परिवार का नाम रोशन किया है। पदक जीतने पर रेलवे स्टेशन पर अश्विनी बिश्नोई का आतिशबाजी के साथ भव्य स्वागत करने के बाद जुलूस निकाला गया।

जब अश्विनी बिश्नोई के एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में 15 वर्ष आयु और 65 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतने की खबर सुनते ही उसके घर शुभकामनाओं का तांता लग गया। 15 वर्षीय एशियन चैंपियन ने 65 किलोग्राम भार वर्ग में लगातार दूसरी बार भारत के लिए गोल्ड मेडल जीतकर अपने देश और माता-पिता का नाम रोशन किया है।

विजेता अश्वनी बिश्नोई ने चीन की पहलवान को हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। भीलवाड़ा की इस खिलाड़ी की एशियन कुश्ती प्रतियोगिता में यह लगातार दूसरी जीत है। अश्विनी के पिता मुकेश बिश्नोई एक मिल में मजदूरी करते हैं।

- **अश्विनी बिश्नोई का भीलवाड़ा रेलवे स्टेशन पर आतिशबाजी के साथ भव्य स्वागत करने के बाद जुलूस निकाला गया**

जानकारी के मुताबिक मुकेश बिश्नोई खुद भी पहलवान थे, लेकिन घर की जिम्मेदारियों और आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से आगे कुश्ती नहीं लड़ पाए और देश के लिए कुश्ती में मेडल जीतने का सपना अधूरा ही रह गया। अब उनका मेडल जीतने का सपना उनकी बेटी ने पूरा किया है। बेटी के भीलवाड़ा पहुंचने पर शहरभर ने उसका स्वागत किया। रेलवे स्टेशन पर आतिशबाजी के साथ भव्य स्वागत करने के बाद जुलूस निकाला गया, जिस पर कई जगह शहरवासियों ने पुष्प वर्षा कर अश्विनी बिश्नोई का स्वागत किया।

जैन समाज की 111 प्रतिभावान बेटियों का सम्मान

उदयपुर, (का.सं.)। सामाजिक संस्था श्री महावीर युवा मंच संस्थान, महिला प्रकोष्ठ द्वारा सौ फीट रोड स्थित शुभकेसर गार्डन में शुक्रवार को जैन समाज की 111 प्रतिभावान बेटियों का सम्मान समारोह हुआ। महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा ऋतु मारू एवं महामंत्री अमिता डांगी ने बताया कि समारोह में मुख्य अतिथि शहर विधायक ताराचंद जैन व समारोह की अध्यक्षता जयनारायण विश्व विद्यालय के रजिस्ट्रार ओपी जैन ने की। सम्मानित अतिथि के रूप में राजसमंद विधायिका दीप्ति किरण माहेश्वरी, संस्थान के मुख्य संरक्षक राजकुमार फत्तावत एवं बडाला क्लासेज के निदेशक राहुल बडाला थे।

इस अवसर पर विधायक ताराचंद जैन ने कहा कि बेटियां दो परिवारों की धरोहर होती है। इसको सहेजना और संवारना समाज कर्तव्य है। 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाली 111 जैन समाज की बेटियों ने अपने टेलेन्ट से अपने आप का सिद्ध किया है। समाज भी इन बेटियों के प्रति अपना दायित्व समझते हुए इन्हे हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने का प्रयास करें। संस्थान के मुख्य संरक्षक एवं सकल जैन समाज के अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने कहा कि संस्थान की महिला प्रकोष्ठ ने केवल बेटियों का सम्मान कर एक अनुठी पहल की है। इस अवसर पर फत्तावत ने प्रतिवर्ष जैन समाज की 5 बेटियों को गोद लेकर इनकी शिक्षाए भरण-पोषण आदि का कार्य करने का भामाशाह जयन्ती पर संकल्प लिया एवं प्रकोष्ठ की बहिनों से सभी बेटियों को स्मार्ट व सशक्त गर्ल्स बनाने का आव्हान किया।

आयोजन की संयोजिका प्रिया झगडावत, चित्रलेखा तलेसरा, सुनीता बेलावत ने बताया कि सभी अतिथियों ने 111 बेटियों को प्रशस्ति पत्र, मेडल, उपरणा, श्रीफल व तिलक द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष अशोक कोठारी, महामंत्री विजयलक्ष्मी गलूंडिया, बीजेएस अध्यक्ष यशवंत कोठारी, कार्यकारी अध्यक्ष दीपक सिंघवी, महामंत्री भूपेन्द्र गजावत, जेजेसी अध्यक्ष सुधीर चित्तौड़ा, कार्यकारी अध्यक्ष अरूण मेहता, महामंत्री सोनाली जैन, बीजेएस प्रदेश महामंत्री श्याम नागोरी, कोर्डिनेटर चन्द्रप्रकाश चौरडिया आदि मौजूद रहे।